परिचय

यरूशलेम और उसके पार

मसीह के पुनरुत्थान के पहले वर्षों में, यरूशलेम वह केंद्र था जहाँ से सुसमाचार आसपास के क्षेत्रों में फैला। यरूशलेम से लेकर कुरिन्थ और इफ़िसुस के समान, रोमी संसार के व्यावसायिक और शासकीय केन्द्रों तक कलीसिया के विस्तार की ऐतिहासिक प्रक्रिया की अपनी ही एक रुचि है। हालाँकि, इतिहास में क्षणिक रुचि से अधिक लालसा होना लोगों को नया नियम पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इसका संदेश, उन लोगों के लिए जो कि कालों के बारे में कुछ जानते हैं, प्रथम शताब्दी के संसार में मसीह की शिक्षा के प्रभाव के साथ आरम्भ होता है। पौलुस के द्वारा कुरिन्थियों को लिखे गए पहले पत्र - अन्य सभी बाइबल आधारित दस्तावेज़ों के समान ही - एक विश्व सुसमाचार कार्य (मिशन) के सन्दर्भ में सटीक बैठते हैं। यरूशलेम से सुसमाचार को फैलते हुए देखना एक तालाब में फेंके गए पत्थर से बाहर की ओर फैलने वाले संकेंद्रित घेरों के समान है।

यहूदिया में रहने वाले मसीहियों का प्रारम्भिक घेरा मूल फिलिस्तीनी यहूदियों से मिलकर बना था। सबसे पहले यहूदी मसीहियों में से अधिकांश के पास थोड़ी सी धन सम्पत्ति या राजनैतिक शक्ति थी। आधिकारिक, संकीर्ण यहूदी धर्म, जिसमें धार्मिक नेतृत्व शामिल था, उसने मसीहियों के विश्वास और नए विचार दोनों का विरोध किया।

सीमित संसाधनो वाले यहूदा के मूल निवासियों के बाद, शिशु कलीसिया के चौड़े होते घेरे की दूसरी लहर यहूदियों के उस समाज से आई जो यरूशलेम के परिदृश्य में अपेक्षाकृत नए थे और परिवर्तन के लिए ग्रहणशील थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक उन्हें “यूनानी भाषा बोलने वाले” (हेल्लेनिस्ट्स) कहती है (प्रेरितों 6:1)। उनकी मूल भाषा यूनानी थी, न कि इब्रानी या अरामी जो कि यरूशलेम में बहुत लम्बे समय से रह रहे लोगों की भाषा थी।

यूनानी भाषा बोलने वालों में से अधिकतर, सम्भवतः सभी, रोमी संसार के दूर दराज़ के कोनों में रहे थे। इनसे से कम से कम कुछ तो दास (गुलाम) थे। उन्होंने यहूदिया से दूर, अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त की थी; परन्तु एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उनकी स्थिति अच्छी तरह से अनिश्चित थी। कभी-कभी स्वामी स्वयं को आर्थिक ज़िम्मेदारी से मुक्त करने के लिए दासों को स्वतंत्र कर देते थे। स्वतन्त्र हो चुके यहूदियों ने स्वयं को अपनी जड़ों से दूर या एक परिवार के बिना पाया जिसे वे अपना कह सकते थे। यहूदिया में रहने वाले यहूदी अपने उन देशवासियों के प्रति दयालु थे जो विस्थापित हो चुके थे। उन्होंने दूर दराज़ के क्षेत्रों में रहने

वाले अपने भाइयों से "प्रवासी" (डायस्पोरा), जो कि "तितर-बितर हो चुके" हैं, उनके समान बात की।[1] एक सामान्य धार्मिक विरासत ने सम्भवतः कनान में यहूदियों को उन्हें अपने भाइयों को घर लौटने के लिए प्रेरित करने का नेतृत्व किया होगा। जैसा आधुनिक यहूदियों ने किया है, रोमी संसार में रहने वाले लोगों ने सम्भवतः उन लोगों की आर्थिक सहायता और मदद की होगी जो कनान में बसने के लिए तितर-बितर हो चुके थे। स्वीकृति और सम्बन्धों की आशा में प्रवासी यहूदियों में से अधिकतर यहूदिया की ओर चल पड़े; परन्तु उन्हें घर जैसे अनुभव के लिए पुनर्वास से अधिक आवश्यकता थी। भाषा और रीती-रिवाज़ों ने उन्हें मूल जनसंख्या से अलग कर दिया। यूनानी बोलने वाले यहूदियों ने पाया कि वे अन्य लोगों के साथ सटीक नहीं बैठ रहे, यहाँ तक कि इस्राएल में भी, जो कि उनके एक परमेश्वर के विश्वास में सहभागी थे। यूनानी भाषा बोलने वालों ने अपना ही मार्ग खोज निकाला। उन्होंने अपने आराधनालयों की रचना की और अपने ही आस-पड़ोस में रहने लगे।

जब मसीह का संदेश यहूदिया में रहने वाले समुदायों के मध्य फैलना आरम्भ हुआ, तो यूनानी भाषा बोलने वालों में से अधिकतर उस गवाही के प्रति ग्रहणशील थे कि यीशु ही मसीह है, वह मृतकों में से जी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है। उनके स्थापित हो चुके स्वदेशी भाइयों की तुलना में, जो अपने रीती-रिवाज़ों में तल्लीन थे, उनके पास मसीह बनने के द्वारा खोने के लिए बहुत कम था। पिन्तेकुस्त की पहली शिक्षा के बाद कुछ ही वर्षों में, यूनानी भाषा बोलने वालों ने कलीसिया के एक बड़े भाग का निर्माण किया। वे यहूदिया में दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में ढल चुके थे; परन्तु मसीहियों के बीच में, उन्हें एक समान व्यवहार किए जाने की आशा थी। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यूनानी भाषा बोलने वालों ने उस समय शिकायत की जब कलीसिया ने उनकी विधवाओं को अनदेखा किया था। कलीसिया ने उनकी सुनी। इसके परिणाम के रूप में, उनके सात सदस्यों को, जो भी अनदेखी की गई थी, उसमें सुधार करने के लिए नियुक्त किया गया (प्रेरितों 6:5)। स्तिफनुस और फिलिप्पुस अगुवे थे, जैसा कि प्रेरितों. 6:8-7:60 और 8:4-40 में देखा गया है। स्तिफनुस उन यहूदियों के लिए एक बिजली की लाठी बन गया जो राजनैतिक और धार्मिक अगुवों के रूप में स्थापित हो चुके थे। उसने यीशु के प्रति अपने इस उत्साह का मूल्य अपने जीवन के साथ चुकाया। फिलिप्पुस उन शरणार्थियों में से एक था जो उस समय भाग निकला जब स्तिफनुस की मृत्यु ने एक व्यापक सताव की ओर नेतृत्व किया था। उसने उत्तर में यात्रा की और सामरिया में एक सुसमाचार प्रचारक (मिशनरी) बन गया। मसीहियों की बढ़ती व्यापक संख्याओं के ऊपर अगले घेरे को सामरियों ने मिलकर बनाया (प्रेरितों 8:5-25)।

यूनानी भाषा बोलने वालों और सामरियों के सुसमाचार ग्रहण करने के बाद, बाँध का द्वार अन्यजातियों के लिए खुल गया। कुरनेलियुस का परिवर्तन इसमें मील का पत्थर सिद्ध हुआ (प्रेरितों 10); परन्तु अन्यजाति मसीहियत का केंद्र कैसरिया नहीं बनने वाला था, जो कि कुरनेलियुस का दत्तक घर था। अन्य

मसीही उत्तर और पश्चिम में सूर और सैदा, फिनीकियों के नगरों, और साइप्रस के महत्वपूर्ण टापू तक फैल चुके थे। थोड़े से ही समय में, सुसमाचार के बीज अन्ताकिया में बो दिए गए थे, जो कि रोमी संसार की बड़ी जनसंख्या वाले केन्द्रों में से एक था। लूका ने दर्ज किया कि "चेलों को सबसे पहले अन्ताकिया में मसीही कहा गया" (प्रेरितों 11:26)। अन्ताकिया की कलीसिया मुख्य रूप से अन्यजाति मण्डली के रूप में आरम्भ हुई। अन्ताकिया से, सुसमाचार अप्रत्याशित क्षेत्रों में फैलने वाला था। पौलुस की मिशनरी यात्राएँ उसी नगर से आरम्भ होने वाली थीं।

अकसर, तीव्र परिवर्तन और वृद्धि विवादों को भड़काती है। जिस पहले विवाद ने कलीसिया को झटका दिया वह यह प्रश्न था कि क्या मसीही होना एक यहूदी होने का अन्य तरीका था या नहीं। अधिकतर रूढ़िवादी मसीहियों ने मसीह में आने वाले अन्यजातियों को इस बात पर ज़ोर देने को कहा कि उन्हें उन परम्पराओं का पालन करना चाहिए जो उन्हें उनके पितरों से मिली थीं। पौलुस ऐसी कोई शिक्षा नहीं देने वाला था। प्रेरित ने अपने पक्ष को गलातियों को लिखे अपने पत्र में प्रकट किया। इस विषय पर खुली सुनवाई के लिए उसने बरनाबस के साथ अन्ताकिया से यरूशलेम तक यात्रा की (प्रेरितों 15:1, 2)। अन्यजातियों के लिए प्रेरित स्वयं को यरूशलेम कलीसिया के अगुवों के साथ विवाद में नहीं देखना चाहता था, परन्तु वह तब तक प्रतीक्षा भी नहीं करने वाला था जब तक कि सभी गैर-यहूदियों को सुसमाचार सुनाने के लिए सहमत न हो जाएँ।

यरूशलेम में सभा के बाद, सिलास के साथ और जिनमें शीघ्र ही तीमुथियुस भी सम्मिलित हो गया (प्रेरितों 16:1), पौलुस यूनानी-रोमी संसार के केंद्र की ओर चल पड़ा। पवित्रात्मा के निर्देश के अनुसार,वह उस क्षेत्र के आसपास पहुँचा जो आज आधुनिक तुर्की देश है, वह एशिया माइनर में जितना दूर तक जा सका, गया और इसके बाद वह यूरोप के जहाज़ पर सवार हो गया (प्रेरितों 16:10, 11).

और मार्ग के अंतर्गत, पौलुस और उसका दल - फिलिप्पी, थिस्सलुनिके, बिरिया, एथेंस, और कुरिन्थ और समस्त यूनान में अपने पीछे चेलों के समूह को छोड़ते चले गए। प्रेरित ने अन्यजातियों में से परिवर्तित हुए नए चेलों के हाथों में उद्धार, परमेश्वर के साथ शांति, और आने वाले संसार में जीवन का संदेश सौंप दिया। परमेश्वर यीशु नासरी के व्यक्तित्व में मानव रूप में प्रकट हुआ था। यहूदी नेतृत्व की मिलीभगत के साथ रोमियों द्वारा क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद, यीशु को परमेश्वर ने मृतकों से उठाया था। उसकी मृत्यु मानवजाति की मुक्ति के लिए परमेश्वर की योजना के अनुसार हुई थी। उद्धार केवल एक ही द्वारा था किसी अन्य के द्वारा नहीं (प्रेरितों 4:12)। कलीसिया बचाए हुओं की देह थी। एक मसीह होने का अर्थ उस जीवन को गले लगाना था जिसका स्वरूप यीशु ने तैयार किया था। व्यक्तियों को उद्धार देने से परे, यीशु ने लोगों - उसकी कलीसिया, बचाए हुओं पर राज्य किया।

कुरिन्थ में सुसमाचार का परिचय

कुरिन्थ और इफ़िसुस के समान केन्द्रों से सुसमाचार समस्त यूनानी-रोमी संसार में फैलने लगा। पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में, हेरोडोटस ने लिखा, "कुरिन्थ ऐसा स्थान है जहाँ पर यन्त्रशास्त्र को कम तुच्छ समझा जाता है।"[2] तब भी नगर ने एक व्यावसायिक मज़बूत उद्योग का आनन्द लिया था। हेरोडोटस के पाँच सौ वर्ष बाद, कुरिन्थ फिर से रोमियों के लिए एक महान आर्थिक और प्रशासनिक केंद्र बन गया था। कुरिन्थ और इफ़िसुस को ईजियन सागर के एक अव्यवस्थित विस्तार के द्वारा अलग किया गया था। इन नगरों के बीच निरन्तर यात्रा और व्यापार होता रहता था। कुछ दिनों की एक यात्रा, द्वीपों पर पूरी रात बिताना, इसमें दो सौ मील और कुछ अधिक इफ़िसुस और केन्क्रेआ के बन्दरगाहों को अलग करते थे। कुरिन्थ नगर में प्रवेश करने के लिए केन्क्रेआ से चार मील की पैदल यात्रा थी। जैसा कि 1 कुरिन्थियों में प्रमाण मिलता है, इन दोनों व्यावसायिक नगरों के बीच निकटवर्ती सम्बन्ध थे।

कुरिन्थ में पौलुस की सर्वप्रथम उपस्थिति सम्भवतः 49 ई. की पतझड़ ऋतु में हुई थी। पतरस के पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार किए हुए लगभग बीस वर्ष बीत चुके थे (प्रेरितों 2)। मसीहियत पहले ही एक विश्वव्यापी धर्म बनने की ओर अपने मार्ग पर थी। ऐतिहासिक अभिलेखों के सम्बन्ध के माध्यम से, कुरिन्थ में पौलुस के समय को एक लगभग सटीक तिथि दी जा सकती है। प्रेरित के कुरिन्थ छोड़ने से थोड़े ही समय पहले, उसे अखाया के राज्यपाल के समक्ष ले जाया गया था, उस प्रान्त में जिसे रोम ने यूनान के दक्षिण भाग से तराश लिया था। गल्लियो राज्यपाल था, जो एक प्रशासकीय गरिमा का पुरुष था।

एक रोमी हाकिम एक शक्तिशाली व्यक्ति होता था, वह सामान्यता एक महत्वपूर्ण रोमी परिवार से होता था। वह "राजदूत के लिए"कार्य करता था। रोम के गणतांत्रिक काल में, एक राजदूत नगर का मुख्य प्रशासनिक कर्मचारी होता था। रोम और इसकी भूमियों के सम्राटों द्वारा राज्य किये जाने के बाद, जो कि ऑगस्टस और उसके बाद के लोग थे,[3] सम्राट स्वयं का नियमित रूप से एक राजदूत के रूप में चुनाव करवाता था ताकि यह काल्पनिक बात बनी रहे कि उसने प्राचीन रोमी परम्पराओं का पालन किया है। अखाया या साम्राज्य में कहीं और एक हाकिम की नियुक्ति रोम में सेनेट के द्वारा एक वर्ष की कार्यकाल के लिए की जाती थी। उस दौरान उसने कार्यकारी, न्यायिक और विधायी शक्तियों का प्रयोग किया। जब हाकिम बोलता, तो वह रोम की वाणी होती थी।

गल्लियो और सर्जियस पौलुस (प्रेरितों 13:7; 18:12) नामक केवल दो हाकिमों का वर्णन नए नियम उनके नाम सहित किया गया है। वर्तनी में थोड़ी छेड़खानी के बाद भी, "पॉलुस" नाम शिलालेखों और साहित्यिक अभिलेखों में बचा हुआ है। इस नाम सहित कई शिलालेख दक्षिण-पूर्वी एशिया माइनर से आते हैं। सर्जियस पौलुस एक शक्तिशाली रोमी था, और उसे उसके संसार में विशाल सम्मान प्राप्त था; परन्तु सर्जियस पौलुस की तुलना में प्राचीन दस्तावेज़ गल्लियो

के विषय में अधिक विशिष्ट सूचना प्रदान करते हैं।[4] अखाया का राज्यपाल महान समबुद्धि दार्शनिक था और जिसने उस समय आभासी तौर अल्पावधि के लिए साम्राज्य चलाया था जब नीरो सत्ता में था (54-68 ई.)। सेनेका के लेखों में गल्लियो के सन्दर्भ मिलते हैं। जब 65 ई. में वह नीरो के अनुग्रह से गिर गया, उसे और उसके भाई दोनों को आत्महत्या करने के लिए विवश कर दिया गया था।

पहली शताब्दी में, रोमियों के लिए यूनानी संसार में डेल्फी, नामक स्थान जो कि यूनानी संसार में पूजनीय स्थल था उसमें में महत्वपूर्ण आधिकारिक नियुक्तियों को दर्ज करना सामान्य अभ्यास था। डेल्फी कुरिन्थ की खाड़ी के उत्तर में स्तिथ था, जो कि कुरिन्थ से सत्तर मील उत्तरपूर्व था। 19 वीं शताब्दी के आरम्भ में पुरातत्ववेत्ताओं को कुछ शिलालेखों के टुकड़े मिले जो उस समय के थे जब गल्लियो सम्राट कलौडियस के शासन (41-54 ई.) के समय एक वर्ष के समय तक अखाया का हाकिम था। चूँकि, अखाया रोमी प्रशासनकी गद्दी था, इसी कारण इतिहासकार कुरिन्थ में गल्लियो के शासन के समय के विषय में निश्चित हैं। गल्लियो को हाकिम के रूप में उसके एक वर्ष के कार्यकाल के लिए 51 ई. वसन्त ऋतू में नियुक्त किया गया था। एक कल्पना के आधार पर गल्लियो कुरिन्थ में पौलुस के वहाँ से जाने से एक या दो महीने पहले आया (प्रेरितों 18:18)। इतिहासकार यह आसानी से पता लगा सकते हैं कि प्रेरित किस समय नगर में था।

कुरिन्थ की यात्रा करने से पहले, प्रेरित ने स्वयं एथेंस में कई महीनों तक प्रचार किया था। यूनानी-रोमी पूजनीय गद्दी की तुलना में उसकी सफलता कम प्रतीत होती थी (प्रेरितों 17:34)। सिलास और तीमुथियुस अभी तक मकिदूनिया में थे। वह उनके साथ मेल करने के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु कोई उपाय काम नहीं आया। जब पौलुस ने कुरिन्थ में प्रवेश किया, वह अपने साथियों के बिना था; यह संकेत करता है कि वह अधिक उत्साह से भरा हुआ नहीं था (1 कुरि. 2:3), सम्भवतः उसने अकेले ही यात्रा की। जो कोई भी बिना साथियों के भूमि पर यात्रा करता है वह स्वयं को हानि के मार्ग में डालता है।

एथेंस से कुरिन्थ तक की यात्रा ने दो विकल्प दिए। एक ऊपरी भूमि का मार्ग था जिसमें पाँच दिनों की आवश्यकता पड़ती और कुछ कठिन क्षेत्रों से होकर एक सड़क को पार करना होता। समुद्र से होकर यात्रा करना अधिक खर्चीला होता, परन्तु यह एक दिन में किया जा सकता था। प्रेरित पैदल ही लम्बी यात्राएं करने का अभ्यस्त था। एक भूमि यात्रा उसे एथेंस से पश्चिम में एलीयुसिस को ले जाती, जो डिमीटर को समर्पित एक विश्व प्रसिद्ध मन्दिर का घर था, जिसे अनाज देवी और एक दूसरी देवी की माता कहा जाता था, जिसे “कोर” या “पर्सेफ़ोन” भी कहा जाता है।[5] सम्राट और राजा वहाँ एलुसिनियन रहस्यों का आरम्भ करने जाते थे। जैसे-जैसे प्रेरित ने आगे बढ़ता रहा, तो वह उसके बाईं ओर सलामिस के टापू को देखने में भी सक्षम रहा होगा। पौलुस के पाँच सौ वर्ष पहले, एथेंस वासियों ने क्षर्यष की फारसी सेनाओं के खिलाफ नौसैनिक युद्ध में यूनानी नगरों

के गठबंधन का नेतृत्व किया था। यह मुठभेड़ जल की उस सकरी जलसंधि में हुई थी जो सलमीस को मुख्य भूमि से उत्तर तक अलग कर देता है। हालाँकि संख्या में काफ़ी कम होने पर भी यूनानी प्रबल हुए और उन्होंने अपने देश को स्वतंत्र रखा। वे इतिहास के इस भाग को कभी भूलने वाले नहीं थे।

जब उसके मार्ग ने एक दक्षिणी दिशा लेना आरम्भ किया, तो प्रेरित ने अपने दाहिनी ओर मेगारा के नगर को उसके प्रसिद्ध दोहरे एक्रोपोलिस सहित देखा होगा। और जब उसने कुरिन्थ के इस्थमुस के पर्वतों को पार किया होगा तो शीघ्र ही भूमि और ऊँची होने लगी होगी। उसने कुरिन्थ के पूर्व में केन्क्रेआ बन्दरगाह पहुँचने से पहले अवश्य संसार के कुछ मनमोहक दृश्यों को देखा होगा। इसके बाद उसकी यात्रा उसे वहाँ से इस्थिमीयन खेलों के पिछले स्थान की ओर ले गई होगी, जो समुद्र के देवता पोसाइडन को समर्पित थे। उनमें ओलम्पियन खेलों की पुरातनता की कमी थी, परन्तु ओलम्पिया दूर पश्चिम में पेल्पोंनेस्सुस में स्थित था; इस्थिमिया, इसके विपरीत, यूनानी बोलने वाले संसार के हृदयों में बसा था। लोग उस स्थान में द्विवार्षिक खेलों के लिए जमा थे। प्राचीन यात्रियों ने इस्थिमिया पोसाइडन के मन्दिर की भव्यता की तुलना ओलम्पिया में ज़ीयुस के मन्दिर से की। एक पन्थ के नायक, पालाएमोन का मन्दिर भी पोसाइडन के मन्दिर के निकट खड़ा था। प्रेरित को सम्भवतः मूर्तिपूजा के प्रत्येक प्रमाण पर घृणा हुई होगी जिसने उसके प्रत्येक कदम का सामना किया था। देवता उस भूमि के प्रत्येक भाग में बुने हुए थे।

वह नगर जिसे पौलुस जानता था

सम्भवतः पौलुस जब पोसाइडन के मन्दिर से कुछ मील दूर चला होगा तो उस पर तेंज़ धूप पड़ रही होगी। ग्रीष्मकाल के महीनों में आकाश साफ़ रहता है; सूर्य असुरक्षित त्वचा पर मानो हथौड़े की तरह पड़ता है। इस्थमुस पर एक नगर था जो इजीयन सागर को एड्रिएटिक सागर से तब तक अलग करता था जब तक यूनानी एक भूतकाल की पुनः रचना कर सकते थे। “कुरिन्थ” नाम स्वयं में ही ऐसी बोली की गवाही देता है जो यूनानी भाषा से पहले की है। इस्थमुस और जो नगर उस पर प्रभुता करता था वह उसके साथ व्यापार सम्बन्धों से जुड़ा हुआ था। भूगौलिक स्थिति ने कुरिन्थ को उसकी शक्ति और लोकप्रियता प्रदान की। उत्तर और दक्षिण का भूमि यातायात उसकी सीमा से होकर गुज़रता था; पूर्व और पश्चिम के बीच का समुद्री यातायात इसके बन्दरगाहों से होकर गुज़रता था। जबकि केन्क्रेआ पूर्व के लिए बन्दरगाह का नगर था, वहीं लेखुएम पश्चिम के लिए एक बन्दरगाह था। इस्थमुस के सबसे सकरे भाग में, कुरिन्थ के थोड़ा सा उत्तर में उसी के पर्यवेक्षण में, रेलमार्गों सहित एक सड़क थी जिसे दिओल्कोस कहा जाता था। मालवाहक और छोटे जहाज़ों को भूमि के ऊपर चार मील या उससे अधिक ले जाया जाता था।

कुरिन्थ का प्राचीन नगर वहाँ पर लगभग 1000 ई.पू. में डोरिक आक्रमण से

पहले ही था, जो दाऊद और सुलैमान के समकालीन था। यूनानी मन्दिरों के लिए उपयोग की जाने वाली तीन वास्तुशिल्प कलाओं में से डोरिक और कुरीन्थ शैली इसी नगर में उत्पन्न हुई थी। यूनानी प्रभुता के प्राचीन काल की उत्पत्ति कुरिन्थ में ही हुई थी। कुरिन्थ के मिट्टी के बर्तनों के व्यापारियों ने व्यापार के सामानों के मार्ग का समस्त भूमध्यसागरीय संसार में नेतृत्व किया। पौलुस के नगर में पहुँचने से पाँच सौ वर्ष पहले, एथेंस, अपने कट्टरपंथी लोकतंत्र के साथ, और कुरिन्थ, तानाशाह या कुलीन वर्गों द्वारा शासित, भयंकर प्रतिद्वंद्वियों थे पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में, जब यूनानी युद्ध के कारण कम हो गए थे, तो कुरिन्थ मुख्य कारक था। पेलोपोनिशियन युद्ध कुरिन्थुस और इसकी एक कौलनियों के बीच मतभेद के साथ आरम्भ हो गया था। जैसा कि एथेंस और स्पार्टा ने अपने गठबंधन जोड़े, कुरिन्थं स्पार्टा का एक महत्वपूर्ण सहयोगी बन गया।

तीन सौ वर्षों तक कुरिन्थ ने यूनानी संस्कृति में जो योगदान दिया था वह शानदार था, पौलुस के आगमन तक नगर की प्रतिष्ठा कलंकित हो चुकी थी। “धनी कुरिन्थ” के विषय में प्राचीनों ने लिखा। नगर ने शताब्दियों तक कथित समृद्धि का आनन्द लिया था; परन्तु जब पौलुस वहाँ पहुंचा, गलियों, दुकानों, मन्दिरों को एक नया और पुनरीक्षित रूप रहा होगा। परिस्थितियों के एक जटिल समूह के माध्यम से, रोम यूनान के प्रायद्वीप में मध्य-द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में स्थानांतरित हो गया था। युद्ध की एक श्रृंखला के बाद रोम ने मकिदूनिया पर कब्ज़ा कर लिया और इसे एक प्रान्त के समान नियंत्रित किया। फिर भी, यूनान ने रोमन अतिक्रमण का विरोध किया। प्रायद्वीप के दक्षिणी हिस्से में, कुरिन्थ ने स्वतंत्रता पर एक कमज़ोर पकड़ में गठबंधन का नेतृत्व किया। नगर और उसके सहयोगी रोम की सेनाओं के मेल के नहीं थे। 146 ई.पू. में, रोमी जनरल मुम्मिउस ने उन्हें कुचल दिया। चूंकि कुरिन्थ ने रोम के प्रति प्रतिरोध का नेतृत्व किया था, इसलिए जनरल ने नगर को ढाने के द्वारा इसे एक उदाहरण बना दिया था। लोकप्रिय इस्थिमियन खेलों की देख-रेख को सिक्योन को स्थान्तरित कर दिया गया था जो पश्चिम में एक पड़ोसी नगर था। एक सौ वर्षों तक कुरिन्थ के बचे हुए निवासियों पर निगरानी रखी जाती थी। एक गौरवान्वित नगर, यूनानी संसार का एक आभूषण, सियारों और जंगली कुत्तों की खोह बन गया, और रोमियों के द्वारा इसे मिट्टी में मिला दिया गया।

कुरिन्थ का पुनः निर्माण जूलियस सीज़र की पहल के साथ आया, जो निश्चय ही उस समय का सबसे अधिक रंगीन और भक्त पुरुष था। सीज़र ने इस्थमुस के रणनैतिक महत्व को पहचान लिया। 44 ई.पू. में उसकी मृत्यु से थोड़े ही समय पहले, उसने भूमिहीन बसने वालों और रोम के स्वतंत्र लोगों के लिए, उत्तरी अफ्रीका के कार्थेज के खंडहरों और कुरिन्थ में रोमन कौलनियों की स्थापना करने की व्यवस्था की थी। इस्थमुस के शानदार नगर में लैटिन भाषा का पुनर्जन्म हो चुका था। इसके संस्थान, सरकारी संरचनाएं, कर, और धर्म रोमी नमूने के आधार पर थे। पुरातत्ववेत्ताओं के द्वारा खोजे गए पहली शताब्दी के शिलालेख भारी मात्रा में लैटिन में हैं।[6] जब पौलुस नगर में दाखिल हुआ, उसने सड़कों पर

सामान बेचने वालों और स्थानीय नागरिकों को लैटिन भाषा बोलते हुए सुना होगा। सम्भवतः यह उसका पहला अनुभव नहीं रहा होगा कि उसने रोम की आधिकारिक भाषा को यूनानी संसार के नगर की सड़को पर बोलते हुए सुना होगा। जबकि केवल फिलिप्पी ही नए नियम में एक ऐसा नगर है जिसे विशेष तौर पर एक कौलनी का दर्जा प्राप्त था (प्रेरितों 16:12), बल्कि और नगर भी थे। पिसिदिया के निकट अन्ताकिया भी एक कौलनी थी, और लुस्त्रा भी। इस प्रकार के नगरों में, लैटिन भाषी लोग सामान्य रहे होंगे।

जिस कुरिन्थ में पौलुस ने प्रवेश किया वह आमतौर पर एक नया नगर था, परन्तु इसने पहले ही रोम के अखाया प्रान्त में अपना महत्व अर्जित कर लिया था। एथेंस, एक पड़ोसी और उत्तरपूर्व में एक प्रतिद्वंद्वी, शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध होता रहा। उस नगर का इतिहास शानदार था; परन्तु राजनैतिक, आर्थिक तौर पर एथेंस का कुरिन्थ से कोई मेल नहीं था।

कुरिन्थ में - या किसी अन्य यूनानी-रोमी नगर में, इस मामले में रहने वाले लोगों की संख्या - उन्हें गिन पाना कठिन था। प्राचीन विद्वान विभिन्न आँकलन प्रदान करते हैं। अनुमानों का एक समूह, जो कि अधिक या कम अप्रत्याशित सूचना पर आधारित था, कुरिन्थ और आसपास के क्षेत्र ("कुरिन्थिया") की जनसँख्या 100,000 से लेकर 125,000 के बीज में कहीं थी।[7]

कुरिन्थ के धनी नागरिकों में व्यापारी, ज़मींदार, और सरकारी अधिकारी सम्मिलित थे। नगर में श्रमिकों, दासों, पर्यटक शिक्षकों, के झुण्ड रह रहे थे जिनमें कुछ तो आवारा स्तिथि से कुछ ही ऊपर थे।

कई मामलों में, रोमी संसार के एक नगर में दास बनने की सुरक्षा भुखमरी से बचने के लिए कुछ घंटे भीख मांगने से बेहतर रही होगी। कुरिन्थ के निवासियों में से अधिकतर दास रहे होंगे। दासत्व ने मसीहियों के लिए घृणित प्रथाओं का योगदान दिया था। दासों के लिए विवाह करना गैर-कानूनी था। यदि किसी दास को किसी न्यायालय में गवाही देनी होती तो, प्रताड़ना सामान्य बात थी। सभी दास स्त्रियाँ, चाहे वे परिपक्व अथवा किशोरावस्था से पूर्व की हों, वे सभी इन सब के साथ - अपने स्वामियों की सम्पत्ति होती थीं। शिक्षित घराने के सेवकों का कुछ सहनीय जीवन रहा होगा; अन्य खदानों और मिलों में एक समय से पहले मृत्यु के लिए छोड़ दिए जाते थे। उनका प्रतिस्थापन व्यापार करने का एक मूल्य था।

पौलुस ने भरपूरी और कुचल देने वाली निर्धनता के प्रमाण देखे होंगे। जगंली कुत्ते गलियों में घूमा करते थे। बाज़ारों में किसान अनुकूल स्टॉलों के लिए होड़ लगाते थे। व्यापारी मिट्टी के बर्तनों, चन्दन और भोजन के सामानों का प्रदर्शन करते थे। स्त्रियाँ अपने सिरों पर पानी के मटके उठाये संगमरमर के द्वारा सजाये गए प्रसिद्ध पेरिएने के सोते से भीतर बाहर प्रवेश करती थीं। निराश भिखारी रोटी के टुकड़ों के चक्कर में चक्की पीसते थे। नए दृश्यों और ध्वनियों ने पौलुस की इन्द्रियों पर प्रहार किया होगा। वह लोगों के इस झुन्ड के पास मसीह को लाने के लिए आया था।

केवल कुरिन्थ ही व्यापार के लिए उपयुक्त नहीं था, परन्तु जिन मैदानों से नगर घिरा हुआ था वह एक उन्नत कृषि प्रदान करता है। उस प्रान्त में बहुत से सोते थे। उस नगर की कृषि ने अंग्रेजी भाषा पर गहरी छाप छोड़ी थी, क्योंकि "करंट बेरीज़" वास्तव में "कुरिन्थ के अंगूर" हैं।

नगर अपने आप में नीची ढलानों पर बना था जो ऊपर एक विशाल पर्वत की ओर ले जाती थीं। एथेंस और अन्य नगरों में प्रत्येक के पास एक "उच्च नगर" था जो एक एक्रोपोलिस था, जहाँ रक्षक आक्रमण करने वालों को रोकने का अन्तिम प्रयत्न कर सकते थे। कुरिन्थ का भी एक एक्रोपोलिस था, "एक उच्च कुरिन्थ," जो किले के लिए था; परन्तु नगर के केंद्र से पर्वत तक की दूरी और इसके विशाल आकार ने कुरिन्थ को उसके शत्रुओं से थोड़ी सुरक्षा प्रदान की। पर्वत एक रक्षाकवच की बजाए नगर के लिए एक व्यापार का चिन्ह अधिक था।

कुरिन्थ के धर्म

जिस समय पौलुस कुरिन्थ पहुँचा उस समय तक उस मूर्तिपुजक अन्यजाति शहर की प्राचीन प्रथाएँ मरी नहीं थीं। समस्त दावों के विपरीत, न तो प्रथम शताब्दी के न तो पुरातत्व और न ही साहित्यिक अभिलेखों से ऐसा कोई सुझाव मिलता है कि अन्यजाति मूर्तिपूजक धर्म क्षीण होते हुए धर्म थे, जिन्हें स्व-विनाश और मसीहियत से प्रतिस्थापित करने के लिए मात्र हलके से धक्के की आवश्यकता थी। मंदिरों का निर्माण किसी धर्म की जीवन-शक्ति का अपर्याप्त चिन्ह हो सकता है, परन्तु निर्माण कार्यों के लिए खर्चे की लागत कम से कम यह तो संकेत करती थी कि लोग अपनी धार्मिक प्रथाओं का आदर करते थे। प्रथम शताब्दी यूनानी संसार में, विशेषकर कुरिन्थ में, देवताओं के लिए मंदिरों का निर्माण फल-फूल रहा था। पुजारी अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे थे। खेलों तथा अन्य सामाजिक उत्सवों के आयोजन के आरंभ में देवताओं की आशीषों का आहवाहन किया जाता था। बलिदानों को चढ़ाया जाता था। कुरिन्थ में रोमी तथा यूनानी देवी-देवताओं के मिश्रण का अनुमान लगाना कठिन है, परन्तु यह लगभग निश्चित है कि धनी परिवारों के स्कूली बच्चों ने दोनों यूनान और रोम की भरपूर पौराणिक बातों को सीखा होगा।

जब पौलुस कुरिन्थ शहर के केन्द्र में आया, तो उसने टीले पर बने मंदिर को, जो उस स्थान पर प्रमुख था, देखा होगा। उसके खम्बे पुराकालीन थे, स्थानीय पोरोस पत्थर से तराशे हुए। कुरिन्थिया में संगमरमर नहीं होता था। मंदिर को शिल्प कला की डोरीक शैली पर बनाया गया था, उसके मोटे धंसे हुए खम्बे थे जिस से वे अपने ऊपर के स्तंभ को सहारा दे सकें। मुम्मियुस द्वारा उस शहर को तहस-नहस करने के बाद भी बचा हुआ वह मंदिर पौलुस के दिनों में भी प्राचीन संरचना था। आज वह यूनान का सबसे प्राचीन विद्यमान मंदिर है। सबसे अच्छे अनुमानों के अनुसार यूनानियों ने उसे अपोलो के लिए बनवाया था, परन्तु यह अनिश्चित है कि उस देवता से प्रेरित होकर वह मंदिर बनाया गया। क्योंकि

अपोलो की उपासना रोमियों और यूनानियों के द्वारा की जाती थी, इसलिए शहर के रोमी नागरिकों ने, जब वे रोम से वहाँ रहने के लिए लोगों को लेकर आए, वीणा और भविष्यद्वाणी के देवता की सेवा के लिए तथा बलिदान चढ़ाने के लिए पुजारियों को नियुक्त करना जारी रखा।

वासना की देवी एफ्रोडाइट की प्रथाएँ कुरिन्थ में लंबे समय से चली आ रही थीं। प्राचीनों के द्वारा पूर्व दिशा से जोड़ी गई इस देवी को कुप्रुस के तट के निकट समुद्री झाग से उत्पन्न हुआ माना जाता था। यह पंथ कुप्रुस और पेलोपोंनेस्सुस के दक्षिणी छोर पर स्थित कयथीरा द्वीप पर प्रमुख था। ऐसा प्रतीत होता है कि इस देवी की उपासना का प्रचलन पौलुस के आगमन से हज़ार वर्ष से भी पहले यूनानी मुख्य भूभाग पर हो चुका था। यूनानी पौराणिक प्रथाओं ने इस देवी को अपना लिया और एफ्रोडाइट को ज़ीउस की पुत्री घोषित कर दिया।

फिनिकी-कनानी अस्तारते (पुराने नियम की “अश्तारोत”) स्पष्टतः दोनों ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक रीति से यूनानियों की एफ्रोडाइट से जुड़ी हुई है। कनान के प्रजननशक्ति पंथों के साथ वेश्याओं का जुड़ा हुआ होना एक कुख्यात विशेषता थी। यद्यपि यह प्रथा यूनानी शहरों के पंथों में प्रचलित नहीं थी, कुछ स्थानों पर एफ्रोडाइट के साथ पवित्र वेश्यावृत्ति जुड़ी हुई थी। यूनानी भूगोल शास्त्री स्ट्रैबो, नवनिर्मित कुरिन्थ में मसीह के जन्म से लगभग तीन दशक पहले आया था। उसने लिखा, “और एफ्रोडाइट का मंदिर इतना धनी था कि वह एक हज़ार से भी अधिक मंदिर के दासों तथा वेश्याओं का स्वामी था जिन्हें स्त्री तथा पुरुषों ने देवी को समर्पित किया था।”[8] स्ट्रैबो के अनुसार, एफ्रोडाइट का पंथ और उसकी वेश्याएं शहर की समृध्दि में योगदान देती थीं।

कॉमेंट्रीयाँ यह प्रमाणित करने के लिए कि जब पौलुस कुरिन्थ आया तब वेश्यावृत्ति बहुत प्रचलित थी, बहुधा स्ट्रैबो के कथन को उद्धृत करती हैं। ऐसी जानकारी 1 कुरिन्थियों के पाठकों के लिए सहायक होगी, विशेषतः उन खण्डों में जहाँ प्रेरित ने यौन अनैतिकता को संबोधित किया। किंतु इस बात पर संदेह करने के गंभीर कारण हैं कि स्ट्रैबो ने यह वर्णन पुनःनिर्मित रोमी कुरिन्थ को दर्शाने के लिए दिया था। अधिकांश श्रेष्ठ विद्वान जेरोम मर्फी-ओ’ कॉनर के आँकलन को साझा करते हैं:

> ... संदर्भ यह स्पष्ट संकेत देता है कि स्ट्रैबो यहाँ 146 ई.पू. के शहर [अर्थात, उस शहर का जो रोमियों द्वारा नाश किए जाने से पहले का था] का उल्लेख कर रहा है न कि नवनिर्मित रोमी उपनिवेश का जिसमें वह 29 ई.पू. में आया था।[9]

इसके अतिरिक्त, अधिकांश श्रेष्ठ विद्वान, 146 ई.पू. के कुरिन्थ शहर के संबंध में भी, स्ट्रैबो के एक हज़ार पंथ वेश्याओं के दावे को भी गंभीरता से नहीं लेते हैं। स्ट्रैबो सुनी-सुनाई बात का उल्लेख कर रहा था, और वर्तमान लेखकों के समान ही प्राचीन लेखक भी यौन विषय वस्तु को सनसनीपूर्ण बनाने की ओर झुकाव रखते थे। एफ्रोडाइट का मंदिर, जहाँ वेश्याएं अपना धंधा चलाती थीं एक्रोकुरिन्थ

पर बना हुआ समझा जाता था, परन्तु पुरातत्वविदों को ऐसे मंदिर का बहुत ही कम प्रमाण मिला है - निश्चित ही इतना बड़े आकार का तो नहीं जितना एक हज़ार वेश्याओं के लिए चाहिए होगा।

फिर भी, इस दावे के लिए एक और गंभीर समस्या भी है कि जब पौलुस सबसे पहली बार शहर आया था, तो उसे ऐसी पंथ वेश्यावृत्ति मिली थी। एफ्रोडाइट का रोमी प्रतिरूप वीनस है। पौलुस जिस कुरिन्थ में आया था वह रोमी शहर था। जूलियन परिवार, जो कैसर का परिवार था, अपनी वंशावाली वीनस तक ले जाते थे। उनका दावा था कि देवी का लहू उनकी रगों में था। राजपरिवार के लिए यह विचार भी करना कि वीनस के प्रांगणों में वेश्याएं ग्राहकों का मन बहला रही हैं, अपमानजनक होता। ऐसा होने की संभावना बहुत कम थी।

कामुक आसक्तियां कुरिन्थ की ख्याति थी, जिसमें पवित्र वेश्यावृत्ति भी सम्मिलित थी। स्ट्रैबो ने, इस परिस्थिति पर टिप्पणी करते हुए एक कहावत का हवाला दिया: "प्रत्येक पुरुष के लिए कुरिन्थ की यात्रा नहीं बनी है।"[10] समुद्री कप्तानों और व्यापारियों के आते-जाते रहने के कारण इस कामुक आसक्ति को योगदान मिला। फिर भी इसकी संभावना कम ही है कि कुरिन्थ में यौन अतिभोग अन्य यूनानी बोलने वाले महानगरीय स्थानों से अधिक था। वेश्यावृत्ति सभी स्थानों पर थी। समलैंगिकता में लोग मग्न भी होते थे और साथ ही उससे घृणा भी करते थे। मानव जीवन सस्ता था। शिशुओं का गर्भपात करना सामान्य था, या उन्हें जन्म के बाद बाहर खुला छोड़ दिया जाता था। यहूदी रब्बियों के पास अन्यजातियों की नैतिकता को तिरस्कार की दृष्टि से देखने के उचित कारण थे।

अन्य यूनानी शहरों के समान, कुरिन्थ में भी अनेकों देवता थे। अपोलो और एफ्रोडाइट/वीनस के अतिरिक्त अन्य लघु देवता, अप्सराएं और वनदेवता प्रत्येक फौवारे या पेड़ों के झुरमुट में दिखाई देते थे। जब पौलुस कुरिन्थ के चौक से होकर निकला तो वह ओलिम्पस के देवताओं तथा पंथ के नायकों की मूर्तियों और वेदियों से होकर निकला होगा और उसने उन कलाकृतियों को देखा होगा जिनमें देवियां, देवता, अप्सराएं, और वनदेवता अधिकांशतः अनैतिक मुद्राओं में दिखाए गए थे।

ऐस्क्लेपियास और डिमीटर का भी उल्लेख होना चाहिए। खुदाई में रोमी चौक के पश्चिम में स्थित शहर की दीवार में चंगाई के देवता ऐस्क्लेपियास का मंदिर मिला है। कुरिन्थ उस देवता पर केन्द्रित एक महत्वपूर्ण चंगाई के केन्द्र का भी घर था। तीर्थयात्री पूर्वी पेलोपोंनेसुस में स्थित एपीदौरुस[11] को बहुतायत से आते थे, साथ ही कोस द्वीप और एशिया में स्थित पेर्गामुम पर स्थित चंगाई के केन्द्रों पर भी। ऐस्क्लेपियास यूनानियों के लिए एक लोकप्रिय देवता था, यद्यपि तुलनात्मक दृष्टिकोण से वह यूनानी भूमि पर नया था। कुरिन्थ में ऐस्क्लेपियास के स्थल पर पुरात्वविदों को मिटटी से बने शरीर के अंगों का भण्डार मिला है। संभवतः वे देवता को स्मरण करवाने के लिए थे कि शरीर के किस भाग को

चंगाई की आवश्यकता है, या फिर उसे प्रशंसा देने के लिए जब उससे चंगाई का प्राप्त होना मान लिया जाता था। जब पौलुस शहर में आया तो वह मंदिर ऐसा प्रमुख स्थान था जहाँ लोग सामान्यतः जाया करते थे।

शहर के उत्तर में, एक्रोकुरिन्थ की ढलानों पर देवी डिमीटर और उसकी पुत्री पेर्सेफोन के मंदिर के अवशेष हैं। प्रतीत होता है कि महिलाएं यहाँ मिलने-जुलने और साथ मिलकर भोजन करने के लिए आया करती थीं। पुरातत्वविदों को यहाँ के मैदानों में अन्य अवशेषों के अतिरिक्त मिट्टी की पट्टियाँ मिली हैं। उनपर श्राप लिखे हुए हैं। जब भी देवी की किसी उपासक को किसी के विरुद्ध कोई वैमनस्य होता था, तो वह पट्टी पर श्राप लिखकर मंदिर के मैदान में दबा देती थी, और देवी से प्रतिशोध लेने की प्रार्थना करती थी। पौराणिक कथाओं में पेर्सेफोन का नीचे के संसार के देवता प्लूटो के साथ संबंध था। ऐसे देवता उस समय विशेषतयः उपयोगी माने जाते थे जब शत्रुओं पर श्राप सुनाना होता था।

कुरिन्थ और उसके आस-पास के क्षेत्र में जिन देवताओं की उपासना होती थी उनमें से कुछ तुलनात्मक दृष्टिकोण से नए थे। पूर्व के रहस्यमय पंथ लोकप्रीय थे। एशिया माइनर में पुरात्वविदों को अधेड़ सायबेले और युवा सहचर एडोनिस के बहुत से चित्रण मिले हैं। सेंक्रिया में प्राचीन मिस्त्री देवी आइसिस के पंथ का फलता-फूलता केन्द्र था। दोनों सायबेल और आइसिस, पौलुस के समय तक रहस्यमय अनुष्ठानों और अन्य प्रथाओं के द्वारा यूनानी विधियों में भली-भांति ढाल लिए गए थे।

रोमी कुरिन्थ में एक अन्य धार्मिक बल उल्लेखनीय था। पुरातत्वविदों ने कुरिन्थ के चौक के निकट एक चबूतरे पर बने विशाल मंदिर की एक नींव और भवन निर्माण की कुछ सामग्री को निकाला है। इस रीति से रोमी मंदिर बनाए जाते थे, यूनानी नहीं। इसका सबसे अच्छा स्पष्टिकरण है कि यह मंदिर कुरिन्थ में सम्राट के पंथ का भाग था। संभवतः यह अगस्तुस की दिवंगत पत्नि और तिबीरियास की माता, लिविया, के आदर में बनाया गया था। पौलुस के समय तक कुरिन्थ में सम्राट की उपासना ने भली-भांति पैठ बना ली थी, परन्तु राजसी परिवार के केवल दिवंगत सदस्यों की ही उपासना हुआ करती थी। सम्राट का पंथ एक प्रकार से पूर्वजों की उपासना के समान ही थी। प्रथम शताब्दी में, सिरफिरे मनुष्यों जैसे कि कैलिग्यूला और नीरो ने अपने जीवन काल में ही अपने आप को देवता घोषित कर दिया। जब पौलुस वहाँ था तब सम्राट के पंथ का लोगों को बल पूर्वक तथा दबाव के द्वारा आधीनता स्वीकार करवाने से कोई सरोकार नहीं था। अन्य धार्मिक ढांचों के समान, सम्राट पंथ उन शक्तियों के विषय स्पष्टिकरण प्रदान करता था, जिनपर लोगों का कोई प्रभाव नहीं होता था।

कुरिन्थ में, पौलुस को सदियों से गहरी पैठ बनाए हुए भरपूर और विविध धार्मिक दृश्य मिला होगा। उसका सन्देश था कि स्थानीय लोग जिन सभी देवी-देवताओं की उपासना करते थे वे सब व्यर्थ मूर्तियां थे। एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने अपने आप को मूसा और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में होकर इस्राएल पर प्रकट किया था; और फिर नए नियम में उसने अपने आप को सभी पर, क्रूस पर

चढाए गए यीशु मसीह में होकर प्रकट किया। इन मूर्तिपूजकों को जीवते परमेश्वर के बारे में सिखाना कठिन कार्य था।

कुरिन्थ में मसीही समाज का निर्माण करना

कुरिन्थ में आने के पश्चात, पौलुस को शहर के मार्गों के बारे में जानना था। शीघ्र ही वह यहूदी समाज का पता लगाने निकल पड़ा। संसार के अधिकांश महानागरीय केन्द्रों में यहूदियों की उपस्थिति थी। उनमें से कुछ दास या निर्धन स्वतंत्र जन थे, परन्तु अन्य सौदागर और महाजन थे। उनके आराधनालयों के साथ जुड़े हुए कुछ छोटे कमरे होते थे जो यात्रा कर रहे उनके देशवासियों की सुविधा के लिए थे। अन्यथा यहूदी विद्वानों के अनुसार बना भोजन मिलना कठिन होता। संभावना यह है कि प्रेरित ने ऐसे ही किसी कमरे का उपयोग किया होगा।

कुरिन्थ में स्थित पुरातत्व संग्रहालय में प्रमुख रीति से प्रदर्शित एक यूनानी शिलालेख है जो किसी प्राचीन यहूदी आराधानालय की सरदल का भाग प्रतीत होता है। उसमें यूनानी शब्दों का कुछ भाग “यहूदियों का आराधनालय” पढ़ा जा सकता है। यह पत्थर उस स्थल से बिना किसी संदर्भ के आरंभिक पुरातत्व कार्य के समय, सौ वर्ष से भी अधिक पहले मिला था। शिलालेख की तिथि निश्चित करना कठिन है; परन्तु लिखावट की शैली के अनुसार, अनेकों विशेषज्ञों का मानना है कि वह पौलुस के जाने के कुछ सौ वर्ष के बाद का है। यह पत्थर शहर में यहूदी उपस्थिति को प्रमाणित करता है।

माना जा सकता है कि, आराधानालय में आराधना करने वालों में ही पौलुस को वह दंपत्ति मिला था जिनके साथ उसका जीवन वर्षों तक मिला रहना था। वे अक्विला और प्रिस्किला थे, या जैसे पौलुस उन्हें सदैव बुलाता था, “अक्विला और प्रिसका” (16:19)। वे व्यापक रूप से यात्रा किए हुए सौदागर थे जो चमड़े का सामान और तम्बुओं का काम करते थे (प्रेरितों 18:3)। हाल ही में वे रोम से कुरिन्थ को आए थे; परन्तु उनके पूर्वजों का घर रोमी प्रांत पोंतुस में था, जो काले सागर के दक्षिणी तट पर पूर्व और पश्चिम में फैला हुआ इलाका था। उनके घर का शहर सिनोपे हो सकता था, जो व्यापार के लिए भली-भांति स्थित प्रमुख शहर था। लूका ने उन परिस्थितियों का कोई वर्णन नहीं किया जिनके कारण वे रोम आए थे, परन्तु साम्राज्य की सड़कें और जल-मार्ग इतालवी प्रायद्वीप लेकर जाती थीं। संभवतः उस दंपत्ति को सिनोपे तथा पोंतुस के अन्य शहरों की कार्यशालाओं के उत्पाद के लिए रोम में निकासी का अवसर मिला था। परन्तु रोम में उनके रुकने में बाधा आई थी। उनके नियंत्रण के बाहर की राजनैतिक घटनाओं के कारण उन्हें निकाला जाना पड़ा था (प्रेरितों 18:2)।

अक्विला और प्रिस्क्लिा के कुरिन्थ आगमन के लगभग समकालीन रोमी इतिहासकार इस समय में रोम में यहूदी समुदाय में हुए उपद्रव के बारे में बताते हैं। आरंभिक दूसरी शताब्दी में लिखते हुए, सुतोनियुस ने लिखा कि सम्राट

क्लौदियुस ने, पौलुस के कुरिन्थ आने से एक या दो वर्ष पहले, रोम से यहूदियों को निष्कासित कर दिया था। इतिहासकार ने कहा कि यह अशांति "क्रेस्तुस के उकसाए जाने के कारण हुई।"[12] इस "क्रेस्तुस" की पहचान बहुत अनुमान का विषय रही है। यह संज्ञा, जिसका अर्थ "दयालु" या "उदार" है, लातीनी बोलने वाले इलाकों में दासों द्वारा रखा जाने वाला आम नाम था। यह असंभावित लगता है कि "क्रेस्तुस" नाम के किसी अज्ञात व्यक्ति ने यहूदी समुदाय को किसी परिवाद के कारण उकसाया था। साथ ही, "क्रेस्तुस" वर्तनी "क्रिस्तुस" के, जो "क्राईस्ट" का लातीनी शब्द है, निकट है। सुतोनियुस, घटना के पचास से अधिक वर्ष बाद लिखते हुए, और यहूदी समुदाय में होने वाली बातों से कम परिचित होने के कारण, वह "क्रेस्तुस" और "क्रिस्तुस" में चकरा गया होगा। रोमी यहूदियों में मतभेद और अशांति विकसित हुई होगी, यहूदिया में घटित होने वाली घटनाओं को लेकर - विशेषकर, इस दावे के कारण कि नासरत का यीशु ही परमेश्वर का मसीह है। रोमी अधिकारियों ने उपद्रव को न सहने और सभी यहूदियों को शहर से निष्कासित करने का निर्णय लिया होगा।

यदि रोम के यहूदियों में होने वाला उपद्रव मसीहियत के प्रवेश के कारण था, तो यह इतनी आरंभिक तिथि (लगभग 49 ई.) के कारण उल्लेखनीय है। यह उपद्रव प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान होने से बीस वर्ष से भी कम में हुआ था। बहुत अधिक संभावना है कि जब पौलुस अक्किला और प्रिस्किला से मिला था, तब वे मसीही ही थे। पवित्र अभिलेख प्रेरित द्वारा उन्हें सिखाने या बपतिस्मा देने के विषय में कुछ नहीं कहता है। एफ. एफ. ब्रूस का निष्कर्ष था,

> उनके लिए पौलुस के किसी भी हवाले में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वे उसके द्वारा परिवर्तित किए गए: सारे संकेत यही हैं कि वे उससे मिलाने से पहले से ही मसीही थे, और इस रीति से वे रोम में रहने के समय में भी मसीही थे ... ।[13]

पौलुस का उस दंपत्ति के साथ न केवल साझा व्यवसाय था, वरन उसने और उन्होंने एक ही विश्वास का आलिंगन भी किया था। पौलुस के कोरिन्थ में आने से पहले ही वहाँ मसीही समुदाय का आरंभ हो चुका था।

अक्किला और प्रिस्किला संभवतः कोरिन्थ में इस्थमियन खेलों के कारण स्थानान्तरित हुए थे। जब यात्री उन क्रीड़ाओं के लिए आते तो उन्हें आश्रय-स्थल की आवश्यकता होती। दंपत्ति को खिलाड़ियों और दर्शकों में अपने चमड़े के तम्बुओं के लिए बाज़ार मिल गया होगा। कुछ समय तक पौलुस ने उनके साथ काम किया होगा, उनकी कार्यशाला में वह लोगों को मसीह के बारे में अवसरानुसार सिखाता रहा होगा। प्रेरित अपने हाथों से परिश्रम करने से कतराता नहीं था (1 थिस्स. 2:9); परन्तु बहुत सप्ताह नहीं बीते थे कि सिलास और तिमुथियुस मकिदूनिया से आ गए। प्रत्यक्षतः वे कुछ सहायता राशि लेकर आए जिससे पौलुस सुसमाचार प्रचार करने और कलीसिया को बनाने-बढ़ाने में अपना सारा समय समर्पित कर सका (प्रेरितों 18:5; 2 कुरि. 11:9)।

जब यहूदियों ने उसके प्रबल प्रयासों का विरोध किया, तो पौलुस आराधानालय के अपने कमरे से निकलकर निकट के तितुस युस्तुस (लातीनी नाम) के घर में चला गया। पौलुस के आगमन से पहले, तितुस "परमेश्वर का एक भक्त"था (प्रेरितों 18:7)। प्रतीत होता है कि उसने सभी यहूदी परम्पराओं को कभी ग्रहण नहीं किया था। वह और उसके समकालीन लोग यहूदी मत, उसकी प्राचीनता, उसमें परमेश्वर के एक होने की समझ-बूझ, पारंपरिक पवित्रता, और उसके उच्च नैतिक आदर्शों की ओर आकर्षित हुए थे। मसीह के कारण, पौलुस उन्हें वह दे सका जिसके कारण वे यहूदी मत की ओर आकर्षित हुए थे, बिना खतना, पारंपरिक पवित्रता, और अन्य ऐसी बातों के जो गौण प्रतीत होती थीं। पौलुस ने कोरिन्थ में दोनों यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह का अंगीकार करने में अगुवाई की। क्रिस्पुस ने, जो यहूदी समुदाय का एक अगुवा था, बपतिस्मा में मसीह को पहन लिया, और उसी के समान उसके वयस्क संतानों और दासों और अनेकों अन्य कुरिन्थियों ने भी।

अंततः, पौलुस कुरिन्थुस में रह पाने के लिए अत्याधिक सफल हो गया। जो यहूदी उसका विरोध करते थे उनकी उसके प्रति चिड़चिड़ाहट बढ़ती जा रही थी। परन्तु उस शहर में उसके रहने का समय बढ़ गया परमेश्वर से मिले एक सीधे सन्देश द्वारा: "मत डर, वरन कहे जा, और चुप मत रह; ... क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं" (प्रेरितों 18:9, 10)। पौलुस सिखाने में लगा रहा। प्राचीन शहर नए विचारों को ग्रहण करने के लिए जाने नहीं जाते थे; परन्तु प्रेरित शहर में "डेढ़ वर्ष तक" रहा (प्रेरितों 18:11), जो उसके किसी भी अन्य स्थान पर रहने की तुलना में सबसे लंबा समय था। वहाँ उसके कार्य का अन्त तब हुआ जब यहूदी समुदाय ने उसके विरुद्ध अखाया के रोमी राज्यपाल के समक्ष दोषारोपण किया। गल्लियो उन आक्षेपों से प्रभावित नहीं हुआ (प्रेरितों 18:17)। जहाँ तक उसका संबंध था, पौलुस और यहूदियों के मध्य धार्मिक मतभेद स्वयं यहूदियों द्वारा अपने समुदाय के अन्दर ही निपटा लेने लायक मामला था। परन्तु राज्यपाल कोरिन्थ में उस यहूदी उपद्रव की पुनःआवृत्ति नहीं होने देना चाहता था जैसा रोम में हुआ था। उस समय, पौलुस नहीं वरन सोस्थेनीस की, जो यहूदी आराधानालय का नया सरदार था, उसके न्याय सिंहासन के सामने सार्वजनिक अपमान और पिटाई हुई थी। लूका ने लिखा, "परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिंता न की" (प्रेरितों 18:17)।

न्यायिक वैधता के संबंध में, लगता है कि गल्लियो ने वही रुख अपनाया जिसका निष्कर्ष सुतोनियुस से लिया जा सकता है: जहाँ तक रोमियों का संबंध था, मसीहियत यहूदी मत का ही एक पंथ था।[14] उनकी आशा थी कि यहूदी अपने मतभेद आपस में ही सुलझा लेंगे। रोमी, मतभेदों का उपद्रव में बदल जाना, सहन नहीं कर सकते थे। उनका तर्क था कि जब यहूदियों के आतंरिक कलह सामाजिक अव्यवस्था में बदल जाते तो दुषप्रभावों को सभी को सहना पड़ता। कम से कम आरंभिक दशकों में, रोमी कानून के अंतर्गत मसीहियों को वही संरक्षण मिला जिससे यहूदियों को भी लाभ हुआ था। यद्यपि गल्लियो ने

उसे सहन किया, पौलुस को आभास था कि उसने कोरिन्थ में शत्रु बना लिए थे जो उसे अकेला छोड़ने वाले नहीं थे। क्योंकि वह कुछ समय से यरूशलेम नहीं गया था, इसलिए उसने वहां के मसीहियों से मिलने जाने का निर्णय लिया, जिससे वह अपने कार्य के विषय बता सके और वहाँ के घटनाक्रम की जानकारी ले सके। इसके पश्चात वह सारे साम्राज्य में कलीसियाएं स्थापित करने के कार्य की ओर लौट आएगा।

इफ़सुस, कोरिन्थ, और पौलुस

पौलुस ने अक्विला और प्रिस्किला के साथ कोरिन्थ को छोड़ दिया। यरूशलेम के मार्ग पर उसका पहला ठिकाना इफ़सुस था। संभवतः कोरिन्थ में मिली सुरक्षा के प्रति धन्यवाद के चिन्ह के रूप में पौलुस ने नाज़िर की शपथ (गिनती 6:2-5) ली थी। उसके शपथ में रहने की अवधि उसके कोरिन्थ के पूर्वी बन्दरगाह सेंक्रिया को छोड़ने से पहले समाप्त हो गई थी। इसलिए उसने समुद्री यात्रा के आरम्भ से पहले ही अपने बाल कटवा लिए (प्रेरितों 18:18)। इफ़सुस पहुँचने पर, उसने शहर के यहूदी आराधनालय में मसीह का प्रचार किया और बहुतेरों की रुचि को जागृत किया; परन्तु उसे यरूशलेम पहुँचने की जल्दी थी। हो सकता है कि वह पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया के स्थापित होने की बरसी पर शहर में होना चाह रहा था। इफ़सुस के यहूदियों को लौट कर आने का वचन देने के पश्चात, प्रेरित दक्षिण की ओर गया, फिर पूर्व की ओर लेवांत के लिए। अक्विला और प्रिस्किला इफ़सुस में ही रहे, कारोबार करते रहे, और अपनी गवाही देते रहे कि यीशु ही मसीह है।

लूका ने पौलुस की यात्रा के समय को, संभवतः जो एक वर्ष या कुछ अधिक था, कम ही शब्दों में दर्ज किया (प्रेरितों 18:22; 19:1)। तीन महीनों तक वह यहूदी आराधनालय में प्रचार करता रहा, परन्तु अन्य शहरों में यहूदियों के साथ उसके अनुभव की पुनःआवृत्ति हुई। जब आराधनालय उसके लिए बन्द कर दिया गया, तो उसे तुरन्नुस की पाठशाला में स्थान मिला। जिन दिनों में तुरन्नुस के छात्र छुट्टी पर होते थे, उन दिनों में पौलुस वहाँ मसीह का प्रचार किया। इफ़सुस के लोगों में न केवल सुसमाचार ने जड़ पकड़ी, वरन वह एशिया के रोमी प्रान्तों में भी फैल गया (प्रेरितों 19:10)। पौलुस के इफ़सुस में रहने के समय की लूका ने कम ही घटनाएँ दर्ज की हैं, परन्तु जितना भी हैं वे यह दिखाने को पर्याप्त हैं कि उसकी सफलता के साथ भीषण प्रतिरोध भी था।

पौलुस जानता था कि जिन मसीहियों को वह पीछे कोरिन्थ, थिस्स्लोनिका, और अन्य यूनानी बोलने वाले शहरों में छोड़ कर आया है, उनके सामने यह प्रलोभन रहेगा कि वे उसकी तुलना या बराबरी उन घुमक्कड़ प्रचारकों के साथ करें जो आम तौर से उनके बाज़ारों में घूमते-फिरते थे। प्रथम शताब्दी के यूनानी भाषा बोलने वाले संसार में घुमक्कड़ दार्शनिक-शिक्षक आम थे। उनमें से बहुतेरे बड़बोले, असभ्य, और तुच्छ समझे जाते थे। वे सार्वजनिक स्थानों पर अपने

विचार व्यक्त करते थे, अपने कार्य के लिए धन की माँग करते थे, यदा-कदा उन्हें कोई अनुयायी मिल जाता था, और वे फिर नए अवसरों की ओर निकल पड़ते थे। डियो क्रिसिस्टोम ने, जो पौलुस का निकट समकालीन था, उन मिथ्यावादियों का वर्णन किया जिन्हें उसने इस्थमीयन खेलों के स्थान पर देखा था:

> यह वह समय था ... जब निकम्मे मिथ्यावादियों की भीड़ को पोसाइडन के मंदिर के निकट एक दूसरे पर चिल्लाते और लांछन लगाते हुए सुना जा सकता था, और उनके अनुयायी, जैसे कि वे कहलाए जाते थे, एक दूसरे से लड़ते हुए, अनेकों लेखकों को अपनी बेहूदी कृतियों को ऊंची आवाज़ में पढ़ते हुए, अनेकों कवियों को अपनी कविताएँ सुनाते हुए, कई मदारियों को अपने करतब दिखाते हुए, भाग्य बताने वालों को भाग्य पढ़ते हुए, अनेकों अधिवक्ताओं को न्याय बिगाड़ते हुए और फेरी लगाने वालों को जो कुछ भी उनके पास होता था उसे बेचते हुए देखा जा सकता था।[15]

पौलुस ने जिन मसीहियों को कुरिन्थ में छोड़ा था वे उसको उसी के समान देखने लगे जैसा क्राइसोस्टाम के लोग बताते थे। उनको लगता था कि वे पुनः उससे फिर कभी न मिलेगें। परन्तु, वे गलत थे। पौलुस ने न केवल लोगों को मसीह का बपतिस्मा दिया, परन्तु इन नए विश्वासियों को सिखाते हुए पोषण भी दिया। उसकी रूचि कलीसिया सुदृढ करने, मसीहियों के उस समाज को बनाने में थी जो उसके साथ पवित्र जीवन जीएं जबकि वे मिलकर प्रभु के वापस आने की प्रतीक्षा करते हैं। इफ़िसुस में प्रेरित के कार्य का यह अर्थ नहीं है कि उसने कुरिन्थि को पीछे छोड़ दिया। इफ़िसुस में अपने सफल और आवश्यक कार्य में भी पौलुस ने कुरिन्थ में रहने वाले अपने मित्रों की सुधि ली।

कुरिन्थिस और इफ़िसुस जैसे अधिक जनसख्ंया वाले केन्द्रों के बीच में जहाज़ों का आवागमन *पाक्स रोमन्ना*, “रोम की शान्ति” के समय सामान्य था। संभवतः उसका मार्ग उन्हीं नाविको एवं व्यापारी सहयोगियों के साथ था जो खलोए नामक एक महिला व्यापारी के लिए काम करते थे। वह उन्हें “खलोए के घराने” कहता है। सम्भवतः वे और खलोए स्वयं को कुरिन्थस के मसीही समाज में गिनते थे। जो समाचार उन्होंने पौलुस को दिया, उस आधार पर वे या उनके सूचना देने वालें कुरिन्थियों की कलीसिया के समाजिक जीवन में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित थे।

जो समाचार पौलुस को खलोए के लोगों के द्वारा दिया गया, वह चिन्ता का विषय था। एक सामर्थी कलीसिया में दलबन्दी हो रही थी। अपुल्लोस, एक विद्वान एवं सीखा हुआ व्यक्ति था (प्रेरितो 18:24), जिसने कुरिन्थ की कलीसिया में कुछ समय बिताया था। उसमें और पौलुस में बहुत असमानताएं थीं। प्रेरित ने उन बातों को कम महत्व की समझा जिन्हें मनुष्य ज्ञान की बात समझतें हैं (1 कुरि 2:1, 2); उसका व्यक्तिगत रूप और शब्दों की निपुणता प्रभावशाली नहीं थी (2 कुरि 10:10)। कुरिन्थस के मसीहियो ने तुरंत अपने-अपने दल बना लिये। कुछ अपुल्लोस को अगुवा मानने लगे तो कुछ पौलुस के साथ रहे। जिस

स्वतंत्रता के साथ अपुल्लोस सिकिन्दरिया से इफ़िसुस व इफ़िसुस से कुरिन्थस यात्रा करता था, उससे यह पता चलता है कि वह धनी था। यात्रा महँगी होती थी। उसके ज्ञान और कुशलता ने कुरिन्थुस में कुछ को प्रभावित कर लिया। बुद्धिमानी, दार्शनिकता और कुशलता का प्रचलन धनी कुरिन्थुस में बहुत था। अपुल्लोस विश्वासियों के लिए प्रभावशाली था। पौलुस ने जो सुना उससे उसे इस बात का भय उत्पन्न हो गया कि उसके और अपुल्लोस के प्रति निष्ठावान लोगों की दलबन्दी काबू से बाहर होती जा रही थी। उसने यह आवश्यक समझा कि वह कलीसिया को यह समझाए कि उसकी शिक्षाएं अपुल्लोस का शिक्षाओं से अधिक आधारभूत क्यों है (1 कुरि. 3:1-3)। उसी समय, वह कलीसिया को यह भी बताना चाहता है कि वह और अपुल्लोस दोनों ही मसीह तथा उसकी देह, अर्थात कलीसिया के लिए पीछे हटकर कार्य करने को तैयार है (3:5, 6)। उसके अनुसार अपुल्लोस दलबन्दी के बढ़ते भय सें शहर छोड़कर जा चुका था और पुनः आने के लिए मना कर चुका था (16:12)। पौलुस ने इस कार्य की आवश्यकता को समझा। कलीसिया में दलबन्दी, और उसके साथ दार्शनिकता ने उसे लिखने को बाध्य किया।

जब पौलुस इस पत्र को लिखने पर था अथवा संभवतः लिखना शुरू कर चुका था, एक नया विषय उसके लिखने में जुड़ा। कुरिन्थुस से तीन मित्र आए। उनमें से एक स्तिफनास था, जो उसके द्वारा अख़ाया में पहला विश्वासी था (16:15-17)। इन तीनों के नाम हमें इनके विषय में कम ही बताते हैं। क्योंकि स्तिफनास का नाम उसके घराने के साथ लिया गया है, और क्योंकि पौलुस कलीसिया से चाहता है कि ऐसों के अधीन रहें, इसलिए यह कहना सही होगा कि स्तिफनास कलीसिया में स्थिरता लाने के प्रयास में लगा था। वह शायद उच्च स्तर का धनी व्यक्ति था। वह यूनानियों में सुनाम था। अंग्रेजी के “स्टीफन” और “स्टैफनी,” के समान यह नाम यूनानी शब्द; στέφανος *(स्टीफानोस)* से लिया गया है, जिसका अर्थ खेलों में विजयी होने वाले को दिये जाने वाले पुरस्कार से है।

उसके साथियों के नाम आमतौर पर दासों के होते थे। “फ़ूरतूनातुस” नाम का अर्थ थोड़ा बहुत “भाग्यशाली” के समान है। उसके इस नाम के पीछे शायद एक लंबी कहानी जुड़ी होगी। “अखइकुस” का अर्थ है “अखाया का रहने वाला।” अख़ाया प्रान्त में कुरिन्थुस नगर था। ये दो व्यक्ति, फ़ूरतूनातुस और अखइकुस संभवतः स्तिफनास के दास रहे होगें। पौलुस मालिक व दासों को मसीह में ले आया, बिना इस बात की चिंता किये की इनका आपसी सामाजिक स्तर पर क्या असर होगा (कुलु. 3:22; 4:1)।

इन तीनो के आने से पौलुस को न केवल कुरिन्थुस की कलीसिया के विषय में और जानकारी मिली जिससे कलीसिया में दलबन्दी का समाचार पक्का हुआ, बल्कि उसे उनके द्वारा भाइयों द्वारा भेजा हुआ पत्र भी मिला। पत्र में, कुरिन्थुस के मसीहियों द्वारा पौलुस के लिए सवाल उठाये गए थे। वह कुछ बातों के विषय में दुविधा में थे कि कुछ कठिन मुद्दों का हल कैसे निकाला जाए। पौलुस को

कुरिन्थिस की कलीसिया को पत्र लिखने की एक नई आवश्यकता और दिशा मिली। इस पत्र के लिखने में, वह उनके लिखे पत्र के विषय में लिखता है (1 कुरि. 7:1)। वह उनके पत्र में सवालों के उत्तर में लिखते हुए, एक नियम "अभी विषय में" से परिचय कराता है (7:1; 8:1; 12:1; 16:1)।

पौलुस के कुरिन्थुस आने से पहले वहाँ कहानियाँ एवँ पौराणिक कथाऐं, मिथ्या और कल्पित शहर के विषय में विद्यमान थीं और वहां रहने वाले यूनान-रोम राज्य में सब स्थानों में घूमते रहते थे। यूरोप व एशिया से व्यापार में जुड़े होने के कारण यह अनजान नहीं था। कैसर को सामने रखते हुए पौलुस कुरिन्थस के धुरीकरण को जानता था। कैसर ने रोम की प्रभुता को फैलाया; पौलुस मसीह के सुसमाचार को फैलाने में केन्द्रित था।

विषयवस्तु और रूपरेखा

संक्षिप्त परिचय और उपसंहार के अलावा पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को लिखे पहले पत्र में दो मुख्य भाग पाए जाते हैं: कलीसिया में हुए विकास जिसमें ध्यान देने व सुधार की आवश्यकता है (अध्याय 1-6) तथा कलीसिया के द्वारा पौलुस से पूछे गए सवालो के लिए उसका उत्तर (अध्याय 7-16)। पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को लिखे पत्र के कारण, संसार बदल गया, पवित्र ग्रन्थों को आसपास की जगहों में लागू करने पर बल दिया गया, तथा कलीसिया में सुदृढ़ता आयी। प्रेरित के द्वारा लिखे गए पत्रों में रोमियों के नाम पत्री और कुरिन्थियों को लिखे पहले पत्र को सबसे बड़े तथा प्रभावशाली हैं। ये दोनो आपस में एक दूसरे से अभूतपूर्व रूप से भिन्न है। रोमियों के नाम पत्री सुसमाचार के फैलाने में मसीहियों की सलीकेदार और प्रेरितीय भूमिका को बताती है; 1 कुरिन्थियों में कलीसिया द्वारा मसीह को जानने के विषय में आए व्यावहारिक संघर्ष को बताया गया है। कुछ पचास वर्ष पहले, सी के बैरेट ने दोनो अभिलेखों की आवश्यकता के विषय में लिखा था:

> मैं यह मानता हूँ कि हमारी पीढ़ी की कलीसिया में प्रेरितीय सुसमाचार को पुनः ढूढँनें की आवश्यकता है; और इसलिए यह रोमियों के नाम पत्री आवश्यक है। सुसमाचार तथा उसका विस्तार, नियम, आराधना और नैतिकता को पुनः ढूढँनें के लिए कुरिन्थियों को लिखे पहले पत्र की आवश्यकता है।[16]

बैरेट के इस लेख के कई दशक बीत गए हैं, परन्तु यह आज के संसार में उतने ही आवश्यक हैं जितने कि उसके लिखे जाने के समय में थे।

यहाँ कुरिन्थियों को लिखे पहले पत्र की संक्षिप्त रूपरेखा है:

परिचयः पौलुस और सोस्थिनेस की ओर से अभिवादन (1:1-3)

I. कलीसिया में व्याप्त समस्याएँ जिन पर ध्यान देने और सुधार की

आवश्यकता (1:4-6:20)
A. बुद्धिमानी व दलबन्दी कलह असंगत है (1:4-4:21)
B. नैतिकअखण्ता के लिए मसीही अपेक्षाऐं (5:1-6:20)

II. कलीसिया के प्रश्नों के जवाब (7:1-16:18)
A. विवाह संबंधी प्रश्न (7:1-40)
B. मूर्तिपूजा और अन्य मुद्दों संबंधी प्रश्न (8:1-11:34)
C. आत्मिक वरदानों से संबंधी प्रश्न (12:1-14:40)
D. मृतको के पुनरूत्थान संबंधी प्रश्न (15:1-58)
E. अन्तिम निर्देश (16:1-18)

उपसंहार (16:19-24)

अनुप्रयोग

अनैतिकता और जीवन की अवहेलना

अफ्रोडाइट प्रेम की देवी थी, परन्तु वह बच्चे जनने व परिवार की देवी नहीं थी। यूनानी हीरा को जो ज़ीयुस की पत्नी थी, अथवा अरतिमिस को बच्चा जनने के समय की सुरक्षा के लिए, और हसतिया को, जो घर परिवार की देवी को मानते थे परिवार के मामलों में कुशल रहे। अफ्रोडाइट के लिए बच्चे काम तुष्टि के लिए दुःखदायी होते थे। वह निश्चय ही, वेश्याओं के गर्भपात के समय, अक्सर मृत्यु की प्रक्रिया के समय, अथवा बच्चे को कहीं सुनसान पहाड़ी के पास छोड़े जाने के समय, कहीं नहीं होती थी।

अफ्रोडाइट की पौराणिक कथा के द्वारा अनैतिकता एवं घटिया जीवन शैली का पता चलता है। ये दोनो साथ साथ चलती हैं। यूनानियों की पौराणिक कथाओं मे, अफ्रोडाइट को हेफेस्तुस, जो ईश्वरा को अयोग्य करने वाले शिल्पी और ज़ीयुस तथा हीरा के मसखरा बेटा था, उसकी पत्नी माना जाता था। कुछ समय के बाद, वह ऐरस की संगति में रहने योग्य हो गई। रोमियो में ऐरस के समतुल्य मार्स था, परन्तु मार्स में मुक्ति देने की कुछ योग्यताएं थीं। कृषि के कार्य उसके साथ थे। यूनानी देवता ऐरस केवल लहू,रक्तरंजित और मृत्यु का देवता था। पौलुस के समय से ही कलाकृतियों में अफ्रोडाइट को कामी प्रेम में लिप्त ऐरस की बाहों में, जो युद्ध में खण्डित शरीरो से सजा रहता था, दर्शाया गया है।

अफ्रोडाइट और ऐरस की संगति मनुष्य के अन्धकारमय पहलू को दिखाती है। जब लोग काम वासना के लिए समपर्ण, परिवार और घरों का त्याग देते हैं, तो जीवन घटिया होता है। अफ्रोडाइट और ऐरस की संगति में यदि अतिरिक्त सहयोग को जिनमें जीवन के लिए एक उग्र अवहेलना को न देखें तो वह काम वासना को नियंत्रित नहीं कर सकता। उर्वरता पंथो का पुराने नियम में उल्लेख मिलता है जिनमें दो इस्राएल के परमेश्वर को घृणित लगती हैं। पहली धार्मिक

वेश्यावृति ...” इस कारण तुम्हारी बेटियाँ छिनाल व तुम्हारी बहुएँ व्यभिचारिणी हो गई हैं,” होशे कहता है (होशे 4:13)। वह आगे कहता है “तू ने अन्न के हर एक खलिहान पर छिनाल की कमाई आनन्द से ली है” (होशे 9:1)। दूसरी बात जो यहोवा को बुरी लगती है वह है, कनानी धर्म में मनुष्य की बलि। यिर्मयाह के तथाकथित “मन्दिर उपदेश” में वह कहता है, “उन्होंने ऊँचे-ऊँचे स्थान बनाकर ... अपने बेटे-बेटियों को आग में जलाया है” (यिर्म. 7:31)। कनान की मूर्तिपूजा में वासना की न सिर्फ़ आभासी आराधना दिखती है, परन्तु मोलेक को बच्चों की बलि भी दी जाती थी।

आधुनिक संसार में भी, काम वासना की स्वतंत्रता - युगलों का बिना विवाह के साथ रहना, आसानी से त्यागना,और कामोत्तेजक चित्रों के उद्योग का बढ़ता चलन - जीवन की अवहेलना से जोड़ा जा सकता है। गर्भपात को मनुष्य के अधिकार में प्रतिष्ठापित कर दिया गया है। पुरा काल की शिशुहत्या, आज के गर्भपात के तुल्य है। मसीह से कई वर्षों पूर्व, यूनानियों में यह सामान्य प्रचलन था कि अनचाहे बच्चे को ले जा कर सुनसान पहाड़ी के पास खुले में जानवरों और खतरों के बीच छोड़ दिया जाता था। जो ऐसी मान्यताओं को मानते हैं, उनके लिए जीवन का मूल्य नहीं होता। पौलुस के समय में जिन स्त्रियों के लिए बच्चे जनना असुविधाजनक था, उनका तर्क था कि कि बच्चे जनना गर्भपात से अधिक सुरक्षित था। उसे समझा दिया जाता था कि बच्चा पैदा होने के एक घण्टे बाद, वह नहीं होगा जो पैदा होने से एक घण्टे पहले था।

काम वासना की अनैतिकता और मासूमों की मृत्यु का करीबी संबंध है। एक जीवन के अस्तित्व में आने में काम वासना की इच्छा कहीं न कहीं पाई जाती है। काम भावना व जीवन, दोनो के आदर के लिए, दोनो ही उत्थान एवं पतन के कारण होते हैं। काम वासना जब केवल संतुष्टि के लिए हो, जल्दी ही उसमें संतुष्टि भी नहीं रहती। समपर्ण का स्थान पर काम वासना, आधुनिक संसार पुराने संसार की ओर वापस चला गया है।

समाप्ति नोट्स

[1]διασπορά (*डायस्पोरा*) शब्द का नए नियम में तीन बार उपयोग हुआ है: यूहन्ना 7:35; याकूब 1:1; 1 पतरस 1:1 में। बाद के दोनों मामलों में यह शब्द तितर-बितर हो चुके मसीहियों का संदेश देता है। मसीहियों के लिए उनकी मातृभूमि स्वर्ग है, जबकि यहूदियों के लिए यह कनान था। [2]हेरोडोटस *फारसी युद्ध* 2.167. हेरोडोटस (सी. 484-425 ई.पू.), एक यूनानी इतिहासकार हेलिकार्नासस (आधुनिक बोड्रम, तुर्की) में रहता था। वह “इतिहास का पिता” के रूप में जाना जाता है क्योंकि वह पहला इतिहासकार था जिसे सामग्री को व्यवस्थित रूप से एकत्रित और फिर उन्हें ऐतिहासिक कथाओं में व्यवस्थित करने के लिए जाना जाता था। यूनानी-फारसी युद्धों के उसके अभिलेखों’ में उस समय के भूगोल और लोगों और रीति-रिवाजों पर बहुमूल्य टिप्पणियाँ सम्मिलित हैं। चूंकि उसके लेखन दूसरों के द्वारा दिए गए वर्णनों पर आधारित होते थे,इसलिए वे त्रुटी के अधीन थे; फिर भी, वे इतिहास और बाइबल के विद्यार्थियों के लिए लाभदायक होते हैं। [3]रोमन साम्राज्य की अवधि का आरम्भ सामान्य तौर पर 27 ई.पू. में आँका जाता है, उस वर्ष जब

सीनेट ने ओक्टेवियस को “अगस्तस” नाम दिया था।[4]गल्लियो पर ऐतिहासिक जानकारी का एक अच्छा सार क्लाऊस हाकर, “गल्लियो” *द एंकर बाइबिल डिक्शनरी* में, एड में दिया गया है। डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यूयॉर्क: डबलडे, 1992), 2:901-3. [5]डीमिटर मंदिर के अवशेष, पूर्ण कुरिन्थ की सीमा के बाहर, एक्रोकोरिन्थ के ढलान पर हैं। डाइनिंग के साथ जुड़े भोजन कक्ष और कलाकृतियों का खुदाई के द्वारा निरावरण किया गया है। (नैन्सी बुकिडीस और रोनाल्ड स्ट्राउट, *डीमिटर और पर्सिपोन प्राचीन कांट्रैंस* [प्रिंसटन: अमेरिकन स्कूल ऑफ़ क्लासिकल स्टडीज, 1987].) [6]कुरिन्थ के अभिलेख जॉन हार्वे केंट, *दी इनस्क्रिप्शन्स, 1926-1950, कुरिन्थ*, वॉल्यूम 8, चित्र 3 (प्रिंसटन, एन.जे.: अमेरिकन स्कूल ऑफ़ क्लासिकल स्टडीज़ एट एथेंस, 1966), में प्रकाशित हुए थे। [7]इस कथन का आकलन कि प्राचीन नगरों की आबादी लगभग 5 लाख होती थी, प्रेस्टन दुआने वार्डन और रॉजर एस. बगनल की पुस्तक, “दी फोर्टी थाउसेंड सिटिज़न ऑफ़ इफेसुस,” *क्लासिकल फिलोलॉजी* 83 (जुलाई 1988): 220-23. [8]स्ट्रैबो *ज्यौग्रफी* 8.6.20. [9]जेरोम मर्फी-ओ'कॉनर, *सेंट पॉल्स कोरिन्थ: टेक्स्ट्स एण्ड आर्कयौलौजी*, 3रड रीव. एण्ड एक्सप. एड. (कौलेज्विल्ले, मिन्.: लिटरजिकल प्रैस, 2002), 56. [10]स्ट्रैबो *ज्यौग्रफी* 8.6.20.

[11]एपीदौरुस सैरोनिक खाड़ी (कोरिन्थ की मध्यभूमि के दक्षिणपूर्व) के निकट स्थित एक छोटा सा शहर था। माना जाता था कि यह अपोल्लो के पुत्र चंगाई देने वाले ऐस्क्लेपियास का जन्म स्थान था, और यह यूनानी सँसार के सबसे लोकप्रिय चंगाई केन्द्र ऐस्क्लेपियान का स्थान था। मरीज़ रात्रि व्यतीत करने के लिए एन्कोइमेट्रीया, एक 160-शैय्या वाला निद्रा के विशाल कमरे में बिताते थे, इस धारणा के साथ कि देवता स्वपनों में उन्हें पुनःस्वस्थ होने के लिए क्या करना है बताएंगे। [12]सुतोनियुस *लाईफ ऑफ क्लौडियुस* 25.4. [13]एफ. एफ. ब्रूस, *पौल: अपौसल ऑफ द हार्ट सेट फ्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1977), 251. [14]सुतोनियुस *लाईफ ऑफ क्लौडियुस* 25.4. [15]डियो क्रिसिस्टोम *डिस्कोर्सेस* 8.9. [16]सी. के. बैरेट, *ए कमेंट्री ओं द फर्स्ट एपिसल टू द कोरेन्थियन्स*, हार्परस न्यू टेस्टामैन्ट कमेन्ट्रीज़ (सैन फ्रासिस्कोः हार्पर एण्ड रौ,1968), v-vi.